Happiness generally measured on parameters of development: V-C

PIONEER NEWS SERVICE ■ VARANASI

The 12th two-day international conference on 'Happiness and well-being amidst many crises: Insights from the Indian knowledge tradition' was inaugurated at the School of Management Sciences (SMS) here on Saturday. The chief guest and Vice-Chancellor (V-C) of Mahatma Gandhi Kashi Vidyapeeth (MGKV) Prof Anand Kumar Tyagi said that happiness is generally measured on the basis of the parameters of development. "This parameter should be people-oriented and not materialism", he said. Appealing to the youth, Prof Tyagi stressed on learning the formula of knowledge contained in the Upanishads and Vedas. He said knowledge is that which teaches us to live comfortably by coordinating with nature, knowledge should not depend only on resources. "As a country, we will have to learn from other countries how they not only come out of the problem of existence on the basis of education and art but also stand firmly at the global level", he said Mahamandaleshwar Swami Parmeshwar Das Maharaj of Shaktidham, who was the special guest in the conference said, "If we have to make efforts in our life, then we will have to learn from other countries how they can not only come out of the problem of existence on the basis of education and art but also stand firmly at the global level. If we want to achieve any goal or attain peace and happiness, we have to recognise ourselves." Swami called upon the younger generation to do selfless service and said that we all should always be ready to help each other as the nectar of eternity is present within us.

MGKV VC Prod AK Tyagi addressing a conference on happiness at SMS in Varanasi on Saturday.

Special guest Prof Sadashiv Dwivedi underlined happiness and social welfare and said that policies and multiple crises are interconnected. Describing the ancient Indian knowledge tradition as three-dimensional, he said in reality, people, dialogue and logic are at the centre of ancient Indian knowledge. Another special guest Prof CS Sharma, former professor of Shri Ram College of Commerce, explained what the true meaning of happiness and well-being is. He mentioned that the super ordinate goal is to live in harmony with the universe. Managing Director, Open Spaces Consulting, Mumbai, Dr Anita Madhok said that in Hinduism and Buddhism, meditation is considered to help calm the mind and soul and can also help resolve past life karmas.

Welcoming the guests, Director Prof PN Jha said SMS Varanasi is aware of its responsibility not only towards academics but also towards society. Describing the Mahabharata, Gita and Ramayana as relevant in the modern context, he said that knowledge is primarily a means of purification. On this occasion, a souvenir based on 'Happiness and well-being in the midst of multiple crises: Insights from the Indian knowledge tradition' was also released. The inaugural session was conducted by Prof Pallavi Pathak and the vote of thanks was proposed by the conference coordinator Prof Amitabh Pandey. Executive Secretary Dr MP Singh, Registrar Sanjay Gupta, Prof Sandeep Singh, Prof Avinash Chandra Supkar, Prof Rajkumar Singh and others were also present.

ज्ञान स्वार्थ से नहीं बल्कि मानव कल्याण के लिए उपजता है

वाराणसी (एसएनबी)। स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज में बारहवें दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का शुभारम्भ हुआ। इस अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का मुख्य विषय 'बहुसंकट के मध्य सुख व कल्याण : भारतीय ज्ञान परम्परा से प्राप्त अंतरदृष्टि है' दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस के उदघाटन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के कुलपति प्रो आनंद त्यागी ने कहा कि सही मायनों में ज्ञान स्वार्थ से नहीं बल्कि मानव कल्याण के लिए उपजता है। विशिष्ट अतिथि शक्तिधाम के महामंडलेश्वर स्वामी परमेश्वर दास महाराज ने कहा कि मानव शरीर भी अच्छाई और बुराई का धारक है तो यह मनुष्य पर निर्भर करता है कि वे परिस्थितियों के अनुसार अपने आप को कैसे ढालते है। विशिष्ट अतिथि प्रो सदाशिव द्विवेदी ने प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा को त्रिआयामी बताया। अन्य विशिष्ट अतिथि श्रीराम कॉलेज ऑफ़ कॉमर्स के पूर्व प्रोफ़ेसर प्रो. सी.एस. शर्मा ने समझाया कि खुशी और कल्याण का वास्तविक अर्थ समझाया। इस दौरान डॉ अनीता मधोक ने भी विचार रखे। अतिथियों का स्वागत करते हुए एसएमएस के निदेशक प्रो. पीएन झा ने कहा कि महाभारत, गीता और रामायण को आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिक बताया। उदघाटन सत्र का संचालन प्रो पल्लवी पाठक व धन्यवाद ज्ञापन कॉन्फ्रेंस के समन्वयक प्रो अमिताभ पांडेय ने दिया। कार्यक्रम में देश-विदेश से आये लगभग 300 से अधिक प्रतिभागियों ने शोध-पत्र प्रस्तुत किया। इस अवसर पर अधिशासी सचिव डॉ एमपी सिंह, कुलसचिव संजय गुप्ता, प्रो संदीप सिंह, प्रो अविनाश चंद्र सुपकर, प्रो राजकुमार सिंह आदि उपस्थित रहे।

एसएमएस में दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का आगाज

सुख और कल्याण का मापदंड भौतिकता नहीं बल्कि सर्वकल्याण की भावना-वीसी

दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस में भारतीय ज्ञान परम्परा से प्राप्त अंतरदृष्टि पर विद्वानों के विचार

काशी विद्यापीठ के वाइसचांसलर प्रोफेसर आनंद त्यागी ने कहा कि सही मायनों में ज्ञान स्वार्थ से नहीं बल्कि मानव कल्याण के लिए उपजता है।उन्होंने कहा कि खुशी को सामान्यत: विकास के पैमानों के आधार पर मापा जाता है । यह मापदंड जनोन्मुखी होना चाहिए न कि भौतिकतावाद।वे शनिवार को दो दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय कान्फ्रेंस 卐बहुसंकट के मध्य सुख और कल्याण- भारतीय ज्ञान परम्परा से प्राप्त अंतर्दृष्टि卐 विषयक कान्फ्रेंस के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि पद से स्कूल आफ मैनेजमेंट साइंसेज के बारहवें समारोह में बोल रहे थे। प्रो.त्यागी ने युवाओं से आह्वान करते हुए कहा कि उपनिषदों व वेदों में निहित ज्ञान के सूत्र को सीखें, उन्हें अपनायें, इसी में वास्तविक परमानन्द प्राप्त हो सकता है। विशिष्ट अतिथि उपस्थित शक्तिधाम के महामंडलेश्वर स्वामी परमेश्वर दास महाराज ने कहा कि अगर हमे

अपने जीवन में किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति करनी है या सुख - शांति को प्राप्त करना है तो हमे अपने आप को पहचानना होगा।विशिष्ट अतिथिद्वय प्रोफेसर सदाशिव द्विवेदी और श्रीराम कालेज आफ कामर्स के पूर्व प्रोफेसर सी.एस.शर्मा ने खुशी और सामाजिक कल्याण को रेखांकित करते हुए कहा कि नीतियों और बहुसंकट एक दूसरे से जुड़े हुए हैं । ओपन स्पेसेस कंसल्टिंग, मुंबई की मैनेजिंग डायरेक्टर डॉक्टर अनीता मधोक ने भी विचार व्यक्त किया।अतिथियों का स्वागत करते हुए एस.एम.एस. वाराणसी के निदेशक प्रोफेसर पी.एन.झा ने कहा कि एस.एम.एस. वाराणसी न केवल अकादमिक बल्कि समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को लेकर भी सजग है। इस अवसर पर स्मारिका का विमोचन किया गया। संचालन प्रोफेसर पल्लवी पाठक और धन्यवाद समन्वयक प्रोफेसर अमिताभ पांडेय ने दिया। दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस के पहले दिन अलग अलग तकनीकी सत्रों का आयोजन भी हुआ जिसमें देश-विदेश से आये लगभग 300 से अधिक प्रतिभागियों ने शोध-पत्र प्रस्तुत किया । इस अवसर पर एसएमएस के अधिशासी सचिव डॉक्टर एम.पी.सिंह, निदेशक प्रोफेसर पी.एन. झा,रजिस्टर संजय गुप्ता, प्रोफेसर संदीप सिंह, प्रोफेसर अविनाश चंद्र सुपकर, प्रोफेसर राजकुमार सिंह सहित अनेकों लोग उपस्थित रहे ।

सुख-कल्याण का मापदंड सर्वकल्याण का भाव

वाराणसी। एसएमएस में दो दिनी 12वें अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का शुभारम्भ शनिवार को हुआ। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि विद्यापीठ के कुलपति प्रो. आनंद कुमार त्यागी ने कहा कि सही मायनों में ज्ञान स्वार्थ से नहीं बल्कि मानव कल्याण के लिए उपजता है। सर्वकल्याण की भावना ही सुख का मापदंड है। विशिष्ट अतिथि शक्तिधाम के महामंडलेश्वर स्वामी परमेश्वर दास, विशिष्ट अतिथि प्रो. सदाशिव द्विवेदी रहे। श्रीराम कॉलेज के पूर्व प्रोफेसर सीएस शर्मा ने विचार रखे। स्वागत निदेशक प्रो. पीएन झा ने किया। इस दौरान डॉ. एमपी सिंह, संजय गुप्ता मौजूद थे।

एसएमएस में बहु संकट के मध्य सुख व कल्याण : भारतीय ज्ञान परंपरा से प्राप्त अन्तर्दृष्टि विषय पर आधारित दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस का शुभारम्भ

वाराणसी, मुकेश पाण्डेय, कैलाश महिमा ब्यूरो। सुख और कल्याण का मापदंड भौतिकता नहीं, बल्कि सर्व कल्याण की भावना है दृ यह सन्देश दिया महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के कुलपति प्रो. आनन्द कुमार त्यागी ने एसएमएस वाराणसी में आयोजित बारहवें दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय

कान्फ्रेंस के उद्घाटन सत्र में, एसएमएस में बहु संकट के मध्य सुख व कल्याण रू भारतीय ज्ञान परंपरा से प्राप्त अन्तर्दृष्टि विषय पर आधारित दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस का शुभारम्भ हुआ, उद्घाटन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के कुलपति प्रो. आनन्द त्यागी ने कहा कि ज्ञान स्वार्थ के लिए नहीं, बल्कि मानव कल्याण के लिए होना चाहिए, उन्होंने युवाओं को उपनिषदों और वेदों के ज्ञान को अपनाने का सन्देश दिया। विशिष्ट अतिथि शक्ति धाम के महामंडलेश्वर स्वामी परमेश्वर दास महाराज ने युवाओं को आत्म–परिचय और निस्वार्थ सेवा का आ न किया, बीएचयू के प्रो. सदाशिव द्विवेदी ने भारतीय ज्ञान परंप को त्रिआयामी बताते हुए कहा कि यह लोक, संवाद और तार्किकता पर आध ाारित है। श्रीराम कालेज आफ कामर्स के पूर्व प्रोफेसर प्रो. सी.एस. शर्मा ने भारतीय ज्ञान प्रणाली को समझने की आवश्यकता पर बल दिया, वहीं ओपन स्पेसेस कंसल्टिंग, मुंबई की मैनेजिंग डायरेक्टर डा. अनीता मधोक ने ध्यान की शक्ति और कर्म सिद्धान्त पर अपने विचार व्यक्त किए। कान्फ्रेंस का उद्घाटन एसएमएस वाराणसी के निदेशक प्रो. पी.एन. झा ने किया, उन्होंने कहा कि एसएमएस वाराणसी न केवल अकादमिक उत्कृ ष्टता बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी के प्रति भी प्रतिबद्ध है, इस अवसर पर विषय पर आधारित एक स्मारिका का विमोचन भी किया गया।

कार्यक्रम का संचालन प्रो. पल्लवी पाठक ने किया और धन्यवाद ज्ञापन कान्फ्रेंस समन्वयक प्रो. अमिताभ पांडेय ने दिया, पहले दिन आयोजित

एसएमएस में अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस शुरु

एसएमएस में 12वें अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ

वाराणसी (काशीवार्ता)। स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज (एसएमएस) में दो दिवसीय 12वें अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ शनिवार को हुआ। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के कुलपति प्रो. आनंद कुमार त्यागी ने कहा कि सच्चा ज्ञान स्वार्थ से नहीं, बल्कि मानव कल्याण की भावना से उत्पन्न होता है। उन्होंने कहा कि सर्वकल्याण की भावना ही सुख का वास्तविक मापदंड है। विशिष्ट अतिथि शक्तिधाम के महामंडलेश्वर स्वामी परमेश्वर दास और प्रो. सदाशिव द्विवेदी ने अपने विचार रखे। श्रीराम कॉलेज के पूर्व प्रोफेसर सीएस शर्मा ने भी ज्ञान और समाज के संबंध पर चर्चा की।कॉन्फ्रेंस में स्वागत निदेशक प्रो. पीएन झा ने किया, जबकि इस दौरान डॉ. एमपी सिंह और संजय गुप्ता समेत अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

एसएमएस में "बहुसंकट के मध्य सुख व कल्याण: भारतीय ज्ञान परंपरा से प्राप्त अंतर्दृष्टि" विषय पर आधारित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ

मीडिया फॉर यू

"सुख और कल्याण का मापदंड भौतिकता नहीं, बल्कि सर्वकल्याण की भावना है" इस यह संदेश दिया महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के कुलपति प्रो. आनंद कुमार त्यागी ने एसएमएस वाराणसी में आयोजित बारहवें दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस के उद्घाटन सत्र में। एसएमएस वाराणसी में "बहुसंकट के मध्य सुख व कल्याण: भारतीय ज्ञान परंपरा से प्राप्त अंतर्दृष्टि" विषय पर आधारित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ हुआ। उद्घाटन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के कुलपति प्रो. आनंद त्यागी ने कहा कि ज्ञान स्वार्थ के लिए नहीं, बल्कि मानव कल्याण के लिए होना चाहिए। उन्होंने युवाओं को उपनिषदों और वेदों के ज्ञान को अपनाने का संदेश दिया।

विशिष्ट अतिथि शक्तिधाम के महामंडलेश्वर स्वामी परमेश्वर दास महाराज ने युवाओं को आत्म-परिचय और निस्वार्थ सेवा का आह्वान किया, बीएचयू के प्रो. सदाशिव द्विवेदी ने भारतीय ज्ञान परंपरा को त्रिआयामी बताते हुए कहा कि यह लोक, संवाद और तार्किकता पर आधारित है।

श्रीराम कॉलेज ऑफ कॉमर्स के पूर्व प्रोफेसर प्रो. सी.एस. शर्मा ने भारतीय ज्ञान प्रणाली को समझने की आवश्यकता पर बल दिया, वहीं ओपन स्पेसेस कंसल्टिंग, मुंबई की मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. अनीता मधोक ने ध्यान की शक्ति और कर्म सिद्धांत पर अपने विचार व्यक्त किए।

कॉन्फ्रेंस का उद्घाटन एसएमएस वाराणसी के निदेशक प्रो. पी.एन. झा ने किया। उन्होंने कहा कि एसएमएस वाराणसी न केवल अकादमिक उत्कृष्टता बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी के प्रति भी प्रतिबद्ध है। इस अवसर पर विषय पर आधारित एक स्मारिका का विमोचन भी किया गया। कार्यक्रम का संचालन प्रो. पल्लवी पाठक ने किया और धन्यवाद ज्ञापन कॉन्फ्रेंस समन्वयक प्रो. अमिताभ पांडेय ने दिया। पहले दिन आयोजित ग्यारह तकनीकी सत्रों में देश-विदेश से आए 300 से अधिक प्रतिभागियों ने शोध-पत्र प्रस्तुत किए।

इस अवसर पर एसएमएस वाराणसी के अधिशासी सचिव डॉ. एम.पी. सिंह, निदेशक प्रो. पी.एन. झा, कुलसचिव श्री संजय गुप्ता, प्रो. अविनाश चंद्र सुपकर, प्रो. संदीप सिंह, प्रो. राजकुमार सिंह सहित संस्थान के सभी शिक्षक एवं कर्मचारी उपस्थित रहे

अमर उजाला

वाराणसी ■ रविवार, 2 मार्च 2025

एसएमएस में अंतरराष्ट्रीय कॉफ्रेंस का शुभारंभ

वाराणसी (वि)। स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज (एसएमएस) खुशीपुर में 12वें दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉफ्रेंस का शुभारंभ शनिवार को हुआ। "बहुसंकट के मध्य सुख व कल्याणः भारतीय ज्ञान परंपरा से प्राप्त अंतरदृष्टि" विषय पर वक्ताओं ने विचार रखे। मुख्य अतिथि महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के कुलपति प्रो. आनंद कुमार त्यागी ने कहा कि सही मायने में ज्ञान स्वार्थ से नहीं बल्कि मानव कल्याण के लिए उपजता है। खुशी को विकास के पैमाने के आधार पर मापा जाता है। यह जन्मोमुखी होनी चाहिए न कि भौतिकवाददी। युवाओं से कहा कि उपनिषदों व वेदों में निहित ज्ञान के सूत्र को सीखें, उन्हें अपनाएं इसी में वास्तविक परम सुख मिल सकता है। शक्तिधाम के महामंडलेश्वर स्वामी परमेश्वर दास महाराज, प्रो. सदाशिव द्विवेदी, प्रो. सीएस शर्मा, मुंबई की डॉ. अनीता मधोक ने भी विचार रखे। इस दौरान स्मारिका का विमोचन हुआ। तीन सौ से अधिक शोध पत्र प्रस्तुत हुआ। स्वागत एसएमएस के निदेशक प्रो. पीएन झा, संचालन प्रो. पल्लवी पाठक व धन्यवाद ज्ञापन प्रो. अमिताभ पांडेय ने किया। इस मौके पर डॉ. एमपी सिंह, संजय गुप्ता, प्रो. संदीप सिंह, प्रो. अविनाश चंद्र सुपकर, प्रो. राजकुमार सिंह रहे।

सुख-कल्याण का मापदंड भौतिकता नहीं बल्कि सर्वकल्याण की भावना : कुलपति

एसएमएस में दो दिनी अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस शुरु

वाराणसी (जनवार्ता)। स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज में बारहवें दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का शुभारम्भ हुआ। इस दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का मुख्य विषय बहुसंकट के मध्य सुख व कल्याणः भारतीय ज्ञान परम्परा से प्राप्त अंतरदृष्टि है। उदघाटन सत्र के मुख्य अतिथि महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के कुलपति प्रो आनंद त्यागी ने कहा कि सही मायनों में ज्ञान स्वार्थ से नहीं बल्कि मानव कल्याण के लिए उपजता है। उन्होंने कहा कि खुशी को सामान्यतः विकास के पैमानों के आधार पर मापा जाता है। यह मापदंड जनोन्मुखी होना चाहिए न कि भौतिकतावाद।

अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी पर स्मारिका का विमोचन करते कुलपति प्रो. त्यागी व अन्य।

विशिष्ट अतिथि शक्तिधाम के महामंडलेश्वर स्वामी परमेश्वर दास महाराज ने कहा की अगर हमे अपने जीवन में किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति करनी है या सुख-शांति को प्राप्त करना है तो हमे अपने आप को पहचानना होगा। विशिष्ट अतिथि प्रो सदाशिव द्विवेदी ने खुशी और सामाजिक कल्याण को रेखांकित किया। विशिष्ट अतिथि श्रीराम कॉलेज ऑफ कॉमर्स के पूर्व प्रोफेसर प्रो. सीएस शर्मा ने समझाया कि खुशी और कल्याण का वास्तविक अर्थ क्या है।

कॉन्फ्रेंस में ओपन स्पेसेस कंसल्टिंग, मुंबई की मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ अनीता मधोक ने कहा कि नियमित ध्यान अभ्यास से व्यक्ति को संतुलन और सद्भाव प्रदान करने में मदद मिलती है। अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस के उद्घाटन सत्र में अतिथियों का स्वागत करते हुए एसएमएस के निदेशक प्रो. पीएन झा ने कहा कि एसएमएस न केवल अकादमिक बल्कि समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को लेकर भी सजग है।

इस अवसर पर बहुसंकट के मध्य सुख व कल्याणः भारतीय ज्ञान परम्परा से प्राप्त अंतर्दृष्टि पर आधारित स्मारिका का भी विमोचन किया गया। संचालन प्रो पल्लवी पाठक, धन्यवाद कॉन्फ्रेंस के समन्वयक प्रो अमिताभ पांडेय ने दिया। कॉन्फ्रेंस के पहले दिन अलग अलग तकनीकी सत्रों का आयोजन भी हुआ जिसमें देश-विदेश से आये लगभग 300 से अधिक प्रतिभागियों ने शोध-पत्र प्रस्तुत किया। इस अवसर पर एसएमएस, अधिशासी सचिव डॉ एमपी सिंह, निदेशक प्रो. पीएन झा, कुलसचिव संजय गुप्ता उपस्थित रहे।

समाचार सार

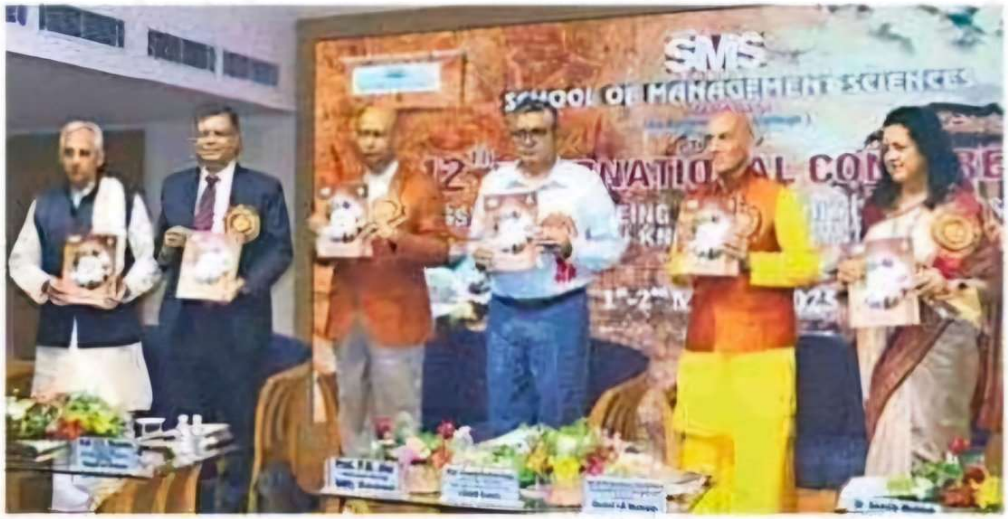

एसएमएस वाराणसी में आयोजित दो दिवसीय अंतराष्ट्रीय कांफ्रेंस के उद्घाटन सत्र में सोवेनियर का विमोचन करते मंचासीन अतिथिगण ● जागरण

ज्ञान वही जो सहज से रूप से जीना सिखाए

वाराणसी (वि.) : महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के कुलपति प्रो. आनंद कुमार त्यागी ने कहा कि सही मायनों में ज्ञान स्वार्थ से नहीं बल्कि मानव कल्याण है। ज्ञान वही है जो हमें प्रकृति के साथ समन्वय बैठाकर सहज रूप से जीना सिखाए, ज्ञान केवल संसाधनों पर निर्भर न रहे। वह शनिवार को स्कूल आफ मैनेजमेंट साइंसेज (एसएमएस) में आयोजित बहुसंकट के मध्य सुख व कल्याण : भारतीय ज्ञान परम्परा से प्राप्त अंतरदृष्टि विषयक कान्फ्रेंस में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि खुशी को सामान्यत : विकास के पैमानों के आधार पर मापा जाता है। यह मापदंड जनोन्मुखी होना चाहिए न कि भौतिकतावाद। बतौर विशिष्ट शक्तिधाम के महामंडलेश्वर स्वामी परमेश्वर दास महाराज ने कहा कि जीवन में सुख-शांति हमें अपने आप को पहचानना होगा। हमें भगवान शिव से सीखना चाहिए जो निर्माणकर्ता और विनाशक दोनों ही रूपों के धारक हैं। प्रो. सदाशिव द्विवेदी, प्रो. सीएस शर्मा, ओपन स्पेसेस कंसल्टिंग, मुंबई की मैनेजिंग डायरेक्टर डा. अनीता मधोक सहित अन्य लोगों ने विचार व्यक्त किया। स्वागत संस्था के निदेशक प्रो. पीएन झा, संचालन प्रो. पल्लवी पाठक व धन्यवाद ज्ञापन प्रो. अमिताभ पांडेय ने किया।

हिन्दुस्तान
वाराणसी, रविवार, 2 मार्च 2025

सुख-कल्याण का मापदंड सर्वकल्याण का भाव

वाराणसी। एसएमएस में दो दिनी 12वें अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का शुभारम्भ शनिवार को हुआ। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि विद्यापीठ के कुलपति प्रो. आनंद कुमार त्यागी ने कहा कि सही मायनों में ज्ञान स्वार्थ से नहीं बल्कि मानव कल्याण के लिए उपजता है। सर्वकल्याण की भावना ही सुख का मापदंड है। विशिष्ट अतिथि शक्तिधाम के महामंडलेश्वर स्वामी परमेश्वर दास, विशिष्ट अतिथि प्रो. सदाशिव द्विवेदी रहे। श्रीराम कॉलेज के पूर्व प्रोफेसर सीएस शर्मा ने विचार रखे। स्वागत निदेशक प्रो. पीएन झा ने किया। इस दौरान डॉ. एमपी सिंह, संजय गुप्ता मौजूद थे।

राष्ट्रीय सहारा
रविवार • 2 मार्च • 2025

ज्ञान स्वार्थ से नहीं बल्कि मानव कल्याण के लिए उपजता है

वाराणसी (एसएनबी)। स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज में बारहवें दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का शुभारम्भ हुआ। इस अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का मुख्य विषय 'बहुसंकट के मध्य सुख व कल्याण : भारतीय ज्ञान परम्परा से प्राप्त अंतरदृष्टि हैं' दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस के उदघाटन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के कुलपति प्रो आनंद त्यागी ने कहा कि सही मायनों में ज्ञान स्वार्थ से नहीं बल्कि मानव कल्याण के लिए उपजता है। विशिष्ट अतिथि शक्तिधाम के महामंडलेश्वर स्वामी परमेश्वर दास महाराज ने कहा कि मानव शरीर भी अच्छाई और बुराई का धारक है तो यह मनुष्य पर निर्भर करता है कि वे परिस्थितियों के अनुसार अपने आप को कैसे ढालते है। विशिष्ट अतिथि प्रो सदाशिव द्विवेदी ने प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा को त्रिआयामी बताया। अन्य विशिष्ट अतिथि श्रीराम कॉलेज ऑफ़ कॉमर्स के पूर्व प्रोफ़ेसर प्रो. सी.एस. शर्मा ने समझाया कि खुशी और कल्याण का वास्तविक अर्थ समझाया। इस दौरान डॉ अनीता मधोक ने भी विचार रखे। अतिथियों का स्वागत करते हुए एसएमएस के निदेशक प्रो. पीएन झा ने कहा कि महाभारत, गीता और रामायण को आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिक बताया। उदघाटन सत्र का संचालन प्रो पल्लवी पाठक व

एसएमएस में दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का आगाज

एसएमएस में ₹बहुसंकट के मध्य सुख व कल्याणः भारतीय ज्ञान परंपरा से प्राप्त अंतर्दृष्टि विषय पर आधारित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ

पूर्वांचल राज्य ब्यूरो

वाराणसी। "सुख और कल्याण का मापदंड भौतिकता नहीं, बल्कि सर्वकल्याण की भावना है" इ यह संदेश दिया महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के कुलपति प्रो. आनंद कुमार त्यागी ने एसएमएस वाराणसी में आयोजित बारहवें दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस के उद्घाटन सत्र में। एसएमएस वाराणसी में "बहुसंकट के मध्य सुख व कल्याणः भारतीय ज्ञान परंपरा से प्राप्त अंतर्दृष्टि" विषय पर आधारित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ हुआ। उद्घाटन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के कुलपति प्रो. आनंद त्यागी ने कहा कि ज्ञान स्वार्थ के लिए नहीं, बल्कि मानव कल्याण के लिए होना चाहिए। उन्होंने युवाओं को उपनिषदों और वेदों के ज्ञान को अपनाने का संदेश दिया।

विशिष्ट अतिथि शक्तिधाम के महामंडलेश्वर स्वामी परमेश्वर दास महाराज ने युवाओं को आत्म-परिचय और निस्वार्थ सेवा का आह्वान किया, बीएचयू के प्रो. सदाशिव द्विवेदी ने भारतीय ज्ञान परंपरा को त्रिआयामी बताते हुए कहा कि यह लोक, संवाद और तार्किकता पर आधारित है।

श्रीराम कॉलेज ऑफ कॉमर्स के पूर्व प्रोफेसर प्रो. सी.एस. शर्मा ने भारतीय ज्ञान प्रणाली को समझने की आवश्यकता पर बल दिया, वहीं ओपन स्पेसेस कंसल्टिंग, मुंबई की मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. अनीता मधोक ने ध्यान की शक्ति और कर्म सिद्धांत पर अपने विचार व्यक्त किए। कॉन्फ्रेंस का उद्घाटन एसएमएस वाराणसी के निदेशक प्रो. पी.एन. झा ने किया। उन्होंने कहा कि एसएमएस वाराणसी न केवल अकादमिक उत्कृष्टता बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी के प्रति भी प्रतिबद्ध है। इस अवसर पर विषय पर आधारित एक स्मारिका का विमोचन भी किया गया।

कार्यक्रम का संचालन प्रो. पल्लवी पाठक ने किया और धन्यवाद ज्ञापन कॉन्फ्रेंस समन्वयक प्रो. अमिताभ पांडेय ने दिया। पहले दिन आयोजित ग्यारह तकनीकी सत्रों में देश-विदेश से आए 300 से अधिक प्रतिभागियों ने शोध-पत्र प्रस्तुत किए।

इस अवसर पर एसएमएस वाराणसी के अधिशासी सचिव डॉ. एम.पी. सिंह, निदेशक प्रो. पी.एन. झा, कुलसचिव श्री संजय गुप्ता, प्रो. अविनाश चंद्र सुपकर, प्रो. संदीप सिंह, प्रो. राजकुमार सिंह सहित संस्थान के सभी शिक्षक एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

सुख व कल्याण का मापदंड भौतिकता नहीं बल्कि सर्वकल्याण की भावना : प्रो० आनंद त्यागी

वाराणसी **(संवाददाता)**। महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के कुलपति प्रो० आनंद त्यागी ने कहा कि सही मायनों में ज्ञान स्वार्थ से नहीं बल्कि मानव कल्याण के लिए उपजता है। उन्होंने कहा कि खुशी को सामान्यतः विकास के पैमानों के आधार पर मापा जाता है। यह मापदंड जनोन्मुखी होना चाहिए न कि भौतिकतावाद।वे आज दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस 'बहुसंकट के मध्य सुख व कल्याणः भारतीय ज्ञान परम्परा से प्राप्त अंतर्दृष्टि' विषयक कान्फ्रेंस के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि पद से स्कूल आफ मैनेजमेंट साइंसेज के बारहवें समारोह में व्यक्त किया। प्रो.त्यागी ने युवाओं से आह्वान करते हुए कहा कि उपनिषदों व वेदों में निहित ज्ञान के सूत्र को सीखें, उन्हें अपनायें, इसी में वास्तविक परमानन्द प्राप्त हो सकता है। हमें एक देश के रूप में अन्य देशों से सीखना होगा कि किस तरह से वे शिक्षा व कला के आधार पर अस्तित्व की समस्या से न सिर्फ बाहर निकले बल्कि मजबूती से वैश्विक स्तर पर खड़े हो पाए । कॉन्फ्रेंस में बतौर विशिष्ट अतिथि उपस्थित शक्तिधाम के महामंडलेश्वर स्वामी परमेश्वर दास महाराज ने कहा की अगर हमे अपने जीवन में किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति करनी है या सुख - शांति को प्राप्त करना है तो हमे अपने आप को पहचानना होगा। विशिष्ट अतिथिद्वय प्रो० सदाशिव द्विवेदी व श्रीराम कालेज आफ कामर्स के पूर्व प्रो.सी.एस.शर्मा ने खुशी और सामाजिक कल्याण को रेखांकित करते हुए

सुख और कल्याण का मापदंड भौतिकता नहीं बल्कि सर्वकल्याण की भावना-वीसी

दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस में भारतीय ज्ञान परम्परा से प्राप्त अंतरदृष्टि पर विद्वानों के विचार

काशी विद्यापीठ के वाइसचांसलर प्रोफेसर आनंद त्यागी ने कहा कि सही मायनों में ज्ञान स्वार्थ से नहीं बल्कि मानव कल्याण के लिए उपजता है।उन्होंने कहा कि खुशी को सामान्यतः विकास के पैमानों के आधार पर मापा जाता है

। यह मापदंड जनोन्मुखी होना चाहिए न कि भौतिकतावाद।वे शनिवार को दो दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय कान्फ्रेंस फ़बहुसंकट के मध्य सुख और कल्याण- भारतीय ज्ञान परम्परा से प्राप्त अंतर्दृष्टिफ़ विषयक कान्फ्रेंस के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि पद से स्कूल आफ मैनेजमेंट साइंसेज के बारहवें समारोह में बोल रहे थे। प्रो.त्यागी ने युवाओं से आह्वान करते हुए कहा कि उपनिषदों व वेदों में निहित ज्ञान के सूत्र को सीखें, उन्हें अपनायें, इसी में वास्तविक परमानन्द प्राप्त हो सकता है। विशिष्ट अतिथि उपस्थित शक्तिधाम के महामंडलेश्वर स्वामी परमेश्वर दास महाराज ने कहा कि अगर हमे अपने जीवन में किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति करनी है या सुख - शांति को प्राप्त करना है तो हमे अपने आप को पहचानना होगा।विशिष्ट अतिथिद्वय प्रोफेसर सदाशिव द्विवेदी और श्रीराम कालेज आफ कामर्स के पूर्व प्रोफेसर सी.एस.शर्मा ने खुशी और सामाजिक कल्याण को रेखांकित करते हुए कहा कि नीतियों और बहुसंकट एक दूसरे से जुड़े हुए हैं । ओपन स्पेसेस कंसल्टिंग, मुंबई की मैनेजिंग डायरेक्टर डॉक्टर अनीता मधोक ने भी विचार व्यक्त किया।अतिथियों का स्वागत करते हुए एस.एम.एस. वाराणसी के निदेशक प्रोफेसर पी.एन.झा ने कहा कि एस.एम.एस. वाराणसी न केवल अकादमिक बल्कि समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को लेकर भी सजग है। इस अवसर पर स्मारिका का विमोचन किया गया। संचालन प्रोफेसर पल्लवी पाठक और धन्यवाद समन्वयक प्रोफेसर अमिताभ पांडेय ने दिया। दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस के पहले दिन अलग अलग तकनीकी सत्रों का आयोजन भी हुआ जिसमें देश-विदेश से आये लगभग 300 से अधिक प्रतिभागियों ने शोध-पत्र प्रस्तुत किया । इस अवसर पर एसएमएस के अधिशासी सचिव डॉक्टर एम.पी.सिंह, निदेशक प्रोफेसर पी.एन. झा,रजिस्टर संजय गुप्ता, प्रोफेसर संदीप सिंह, प्रोफेसर अविनाश चंद्र सुपकर, प्रोफेसर राजकुमार सिंह सहित अनेकों लोग उपस्थित रहे ।

सुख-कल्याण का मापदंड भौतिकता नहीं बल्कि सर्वकल्याण की भावना : प्रो. आनंद

वाराणसी (सन्मार्ग)। महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के कुलपति प्रो0 आनंद त्यागी ने कहा कि सही मायनों में ज्ञान स्वार्थ से नहीं बल्कि मानव कल्याण के लिए उपजता है।उन्होंने कहा कि खुशी को सामान्यत: विकास के पैमानों के आधार पर मापा जाता है। यह मापदंड जनोन्मुखी होना चाहिए न कि भौतिकतावाद।वे आज दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस 'बहुसंकट के मध्य सुख व कल्याण- भारतीय ज्ञान परम्परा से प्राप्त अंतर्दृष्टि' विषयक कान्फ्रेंस के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि पद से स्कूल आफ मैनेजमेंट साइंसेज के बारहवें समारोह में व्यक्त किया। प्रो.त्यागी ने युवाओं से आह्वान करते हुए कहा कि उपनिषदों व वेदों में निहित ज्ञान के सूत्र को

सीखें, उन्हें अपनायें, इसी में वास्तविक परमानन्द प्राप्त हो सकता है। हमें एक देश के रूप में अन्य देशों से सीखना होगा कि किस तरह से वे शिक्षा व कला के आधार पर अस्तित्व की समस्या से न सिर्फ बाहर निकले बल्कि मजबूती से वैश्विक स्तर पर खड़े हो पाए।

कॉन्फ्रेंस में बतौर विशिष्ट अतिथि उपस्थित शक्तिधाम के महामंडलेश्वर स्वामी परमेश्वर दास महाराज ने कहा की अगर हमे अपने जीवन में किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति करनी है या सुख - शांति को प्राप्त करना है तो हमे अपने आप को पहचानना होगा। विशिष्ट अतिथिद्वय प्रो. सदाशिव द्विवेदी व श्रीराम कालेज आफ कामर्स के पूर्व प्रो.सी. एस.शर्मा ने खुशी और सामाजिक कल्याण को रेखांकित करते हुए कहा कि नीतियों व बहुसंकट एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। कॉन्फ्रेंस में ओपन स्पेसेस कंसल्टिंग, मुंबई की मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. अनीता मधोक ने भी विचार व्यक्त किया। दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस के उद्घाटन सत्र में अतिथियों का स्वागत करते हुए एस.एम.एस. वाराणसी के निदेशक प्रो. पीएनझा ने कहा कि एसएमएस वाराणसी न केवल अकादमिक बल्कि समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को लेकर भी सजग है।

आज

रविवार २ मार्च, २०२५ सौर १८ फाल्गुन सं. २०८१ वि.

सुख और कल्याण का मापदंड भौतिकता नहीं बल्कि सर्वकल्याण की भावना-वीसी

दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस में भारतीय ज्ञान परम्परा से प्राप्त अंतरदृष्टि पर विद्वानों के विचार

काशी विद्यापीठ के वाइसचांसलर प्रोफेसर आनंद त्यागी ने कहा कि सही मायनों में ज्ञान स्वार्थ से नहीं बल्कि मानव कल्याण के लिए उपजता है।उन्होंने कहा कि खुशी को सामान्यत: विकास के पैमानों के आधार पर मापा जाता है

। यह मापदंड जनोन्मुखी होना चाहिए न कि भौतिकतावाद।वे शनिवार को दो दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय कान्फ्रेंस बहुसंकट के मध्य सुख और कल्याण: भारतीय ज्ञान परम्परा से प्राप्त अंतर्दृष्टि विषयक कान्फ्रेंस के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि पद से स्कूल आफ मैनेजमेंट साइंसेज के बारहवें समारोह में बोल रहे थे। प्रो.त्यागी ने युवाओं से आह्वान करते हुए कहा कि उपनिषदों व वेदों में निहित ज्ञान के सूत्र को सीखें, उन्हें अपनायें, इसी में वास्तविक परमानन्द प्राप्त हो सकता है। विशिष्ट अतिथि उपस्थित शक्तिधाम के महामंडलेश्वर स्वामी परमेश्वर दास महाराज ने कहा कि अगर हमे अपने जीवन में किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति करनी है या सुख - शांति को प्राप्त करना है तो हमे अपने आप को पहचानना होगा।विशिष्ट अतिथिद्वय प्रोफेसर सदाशिव द्विवेदी और श्रीराम कालेज आफ कामर्स के पूर्व प्रोफेसर सी.एस.शर्मा ने खुशी और सामाजिक कल्याण को रेखांकित करते हुए कहा कि नीतियों और बहुसंकट एक दूसरे से जुड़े हुए हैं । ओपन स्पेसेस कंसल्टिंग, मुंबई की मैनेजिंग डायरेक्टर डॉक्टर अनीता मधोक ने भी विचार व्यक्त किया।अतिथियों का स्वागत करते हुए एस.एम.एस. वाराणसी के निदेशक प्रोफेसर पी.एन.झा ने कहा कि एस.एम.एस. वाराणसी न केवल अकादमिक बल्कि समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को लेकर भी सजग है। इस अवसर पर स्मारिका का विमोचन किया गया। संचालन प्रोफेसर पल्लवी पाठक और धन्यवाद समन्वयक प्रोफेसर अमिताभ पांडेय ने दिया। दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस के पहले दिन अलग अलग तकनीकी सत्रों का आयोजन भी हुआ जिसमें देश-विदेश से आये लगभग 300 से अधिक प्रतिभागियों ने शोध-पत्र प्रस्तुत किया । इस अवसर पर एसएमएस के अधिशासी सचिव डॉक्टर एम.पी.सिंह, निदेशक प्रोफेसर पी.एन. झा,रजिस्टर संजय गुप्ता, प्रोफेसर संदीप सिंह, प्रोफेसर अविनाश चंद्र सुपकर, प्रोफेसर राजकुमार सिंह सहित अनेकों लोग उपस्थित रहे ।

सुख व कल्याण का मापदंड भौतिकता नहीं बल्कि सर्वकल्याण की भावना : प्रो० आनंद त्यागी

वाराणसी राजेश सेठ

एस०एम०एस०, वाराणसी में बारहवें – दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस में देश के ख्यातिलब्ध विद्वानों की हुई जुटान

"बहुसंकट के मध्य सुख व कल्याणरू भारतीय ज्ञान परम्परा से प्राप्त अंतरदृष्टि " पर विद्वानों ने व्यक्त किये भारतीय ज्ञान केंद्रित विचार

अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस के पहले दिन देश–विदेश से आये लगभग 300 से अधिक प्रतिनागियों ने प्रस्तुत किये शोध–पत्र

वाराणसी, 1 माचर्स स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज में बारहवें दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का शुभारम्भ हुआ द्य इस दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का मुख्य विषय ष्बहुसंकट के मध्य सुख व कल्याणरू भारतीय ज्ञान परम्परा से प्राप्त अंतरदृष्टि है द्य दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस के उदघाटन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के कुलपति प्रो० आनंद त्यागी ने कहा कि सही मायनों में ज्ञान स्वार्थ से नहीं बल्कि मानव कल्याण के लिए उपजता है. उन्होंने कहा कि खुशी को सामान्यतः विकास के पैमानों के आधार पर मापा जाता है द्य यह मापदंड जनोन्मुखी होना चाहिए न कि भौतिकतावाद द्य युवाओं से आह्वान करते हुए प्रो० त्यागी ने कहा कि उपनिषदों व वेदों में निहित ज्ञान के सूत्र को सीखें, उन्हें अपनायें, इसी में वास्तविक परमानन्द प्राप्त हो सकता है. ज्ञान वही है जो हमें प्रकृति के साथ समन्वय बैठाकर सहज रूप से जीना सिखाये, ज्ञान केवल संसाधनों पर निर्भर न रहे द्य हमें एक देश के और विनाशक दोनों ही रूपों के ध ारक हैं , उसी प्रकार मानव शरीर भी अच्छाई और बुराई का धारक है तो यह मनुष्य पर निर्भर करता है कि वे परिस्थितियों के अनुसार अपने आप को कैसे ढालते हैं । स्वामी जी ने युवा पीढ़ी को निस्वार्थ सेवा करने का आह्वान करते हुए कहा कि हम सबको एक दूसरे की मदद करने के लिए हमेशा तत्पर रहना चाहिए द्य शाश्वतता का अमृत हमारे भीतर ही मौजूद है द्य

कार्यक्रम मे उपस्थित विशिष्ट अतिथि प्रो० सदाशिव द्विवेदी ने खुशी और सामाजिक कल्याण को रेखांकित करते हुए कहा कि नीतियों व बहुसंकट एक दूसरे से जुड़े हुए हैं द्य उन्होंने प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा को त्रिआयामी बताते हुए कहा कि वास्तव में प्राचीन भारतीय ज्ञान के केंद्र में लोक, संवाद व तार्किकता निहित है. प्रो० द्विवेदी ने कहा कि तार्किक संवाद से निकले ज्ञान को ही लोक ने मान्यता दी है, इसलिए प्राचीन ज्ञान वैज्ञानिक भी है. उन्होंने कौटिल्य नीति पर आधारित तर्क व धन नीति को आज के समय में समीचीन बताया द्य

कार्यक्रम में उपस्थित एक अन्य विशिष्ट अतिथि श्रीराम कॉलेज ऑफ कॉमर्स के पूर्व प्रोफेसर प्रो. सी.एस. शर्मा ने समझाया कि खुशी और कल्याण का वास्तविक अर्थ क्या है। उन्होंने नी बात की जो अब कक्षाओं में प्रवेश कर चुके हैं। उन्होंने कहा कि समस्याएं तब हल होंगी जब लोग भारतीय ज्ञान प्रणाली को समझेंगे. हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म में, कर्म की अवधारणा बताती है कि किसी व्यक्ति के पिछले जीवन में किए गए कार्य उसके वर्तमान और भविष्य के जीवन को प्रभावित कर सकते हैं। इस विचार को अक्सर ष्कर्म का नियमष या ष्कर्मिक ऋणष कहा जाता है।

कॉन्फ्रेंस में ओपन स्पेसेस कंसल्टिंग, मुंबई की मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ० अनीता मधोक ने कहा कि हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म में ध्यान को मन और आत्मा को शांत करने में मदद करने वाला माना जाता है और यह पिछले जीवन के कर्मों को हल करने में भी मदद कर सकता है । नियमित ध्यान अभ्यास से व्यक्ति को संतुलन और सद्भाव प्रदान करने में मदद मिलती है। उन्होंने बताया कि कर्मों से पलायन में व्यक्ति सही मायनों में मोक्ष अंगीकार नहीं कर सकता। ध्यान की शक्ति से पिछले जीवन के कर्मों का बोझ हल्का होता है और आत्मा को शांति मिलती है।

दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस के उद्घाटन सत्र में अतिथियों का स्वागत करते हुए एस. एम. एस. वाराणसी के निदेशक प्रो. पी. एन. झा ने कहा कि एस.एम.एस. वाराणसी न केवल अकादमिक बल्कि समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को लेकर भी सजग है. उन्होंने महाभारत, गीता और रामायण को आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिक बताते हुए कहा कि ज्ञान प्रमुख रूप से पवित्रीकरण करने का साधन है ।

इस अवसर पर बहुसंकट के मध्य सुख व कल्याणरू भारतीय ज्ञान परम्परा से प्राप्त अंतर्दृष्टि पर आधारित स्मारिका का भी विमोचन किया गया । उदघाटन सत्र का संचालन प्रो० पल्लवी पाठक ने व धन्यवाद ज्ञापन कॉन्फ्रेंस के समन्वयक प्रो० अमिताभ पांडेय ने दिया। दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस के पहले दिन अलग अलग तकनीकी सत्रों का आयोजन भी हुआ जिसमें देश–विदेश से आये लगभग 300 से अधिक प्रतिभागियों ने शोध